ISSN: 2583-5149 | An online refereed and peer reviewed journal | Frequency: Biannual

अभिनवधारा
ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
www.ijiis-org.com

Vol-3, Issue-2 | July 2024

भारतीय स्वतंत्रता के अग्रदत्त लोकमान्य तिलक

सुधाकर कुमार

भूमिका

भारत की मिटटी में एक महान सपूत जिसका जन्म २३ जुलाई १८५६ में रत्नागिरी जिले के बॉम्बे प्रेसीडेंसी ब्रिटिश भारत में हुआ वर्तमान में जिसे महाराष्ट्रा कहा जाता है उन्हें लोग बाद में लोकमान्य कहने लगे उनका पूरा नाम बाल गंगाधर तिलक था और उनका पैतृक गांव चीख़ली था उनका जन्म एक बड़े मराठी हिन्दू ब्राह्मण कुल में हुआ था उनके पिता श्री गंगाधर तिलक एक शिक्षक और संस्कृत के विद्वान थे, ये दौर था १८५६ का जिस समय भारत एक कठिन परिस्तिथि से गुजर रहा था और भारत की आत्मा इस बात की प्रतीक्षा कर रही थी की कोई ऐसे व्यक्ति का पदार्पण हो जो भारत की आत्मा की रक्षा कर सके अंग्रेजों के अत्याचार से और भारत की आत्मा को जगा दे और मानो भगवान ने भारत माँ की आत्मा की पुकार को सुन लिया और उसी वर्ष बाल गंगाधर तिलक का जन्म होता है और साथ ही भारतीयों का सोया हुआ स्वाभिमान भी जग जाता है और इसका परिणाम १८५७ की क्रांति का होना जो भारत की पहली स्वतन्त्रता संग्राम की क्रांति मानी जाती है अंग्रेजों द्वारा लगातार भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात हो रहा था और ये १९वी सदी की शुरुवात थी और उस समय की सुप्रसिद्ध कवियत्री एवं लेखक **श्रीमती सुभद्रा सिंह चौहान** द्वारा रचित कविता याद आती है :-

"भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी गुमी हुई आज़ादी की कीमत सब ने पहचानी थी दूर फिरंगी को करने की सब ने मन में ठानी थी चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी"

तिलक के विचारधाराएँ

तिलक के विचारों में कई महत्वपूर्ण तत्व शामिल थे, जो उनके जीवन और कार्यों में दृष्टिगोचर होते हैं। उनके विचारधाराओं में धर्म, संस्कृति, शिक्षा, और राजनीतिक स्वतंत्रता का गहरा संबंध था। उन्होंने हमेशा अपने लेखन और भाषणों के माध्यम से भारतीय समाज में जागरूकता फैलाने का प्रयास किया।

प्रारंभिक जीवन

तिलक का जन्म एक बड़े मराठी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता गंगाधर तिलक एक शिक्षक और संस्कृत के विद्वान थे। बचपन से ही तिलक ने भारतीय संस्कृति और परंपराओं को अपने परिवार से सीखा। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा महाराष्ट्र में प्राप्त की और फिर बंबई विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। गंगाधर तिलक जैसे महान भाग्यवान व्यक्ति के जन्म होते ही भारत की तलवारें चमकने लगती हैं इस तरह भारत में एक नई ऊर्जा सी दौड़ पड़ती है और एक नया युग की शुरुआत होता है इनके पिता शिक्षक और माता बहोत गुणी और धार्मिक प्रवर्ति की थी इसलिए इनको आपने घर से ही भारतीय संस्कृति और संस्कार विरासत में मिली और बचपन से ही इन्होनें अपने जिम्मेवारियों को बखूबी निभाया चाहे परिस्तिथियाँ कैसी भी रही हो उन्होंने समाज में अपना लोहा मानवाया। अपनी प्रारंभिक शिक्षा महाराष्ट्रा से करि और BA करने के लिए बॉम्बे यूनिवर्सिटी गए और परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने 1879 में LLB की पढाई करी उसके बाद अपना पूरा जीवन देश सेवा में समर्पित कर दिया कानून से स्नातक की पढ़ाई करने के बाद से उनके जेहन में केवल भारतीय संस्कृत और संस्कार की कैसे रक्षा की जाये और उसके लिए क्या कार्य किये जाएँ उनके विचारों को कुरेदती रहती उनका लक्ष्य भारतियों को उनका अधिकार उनको वापस दिलाना था और इसी ध्येय से वो आगे बढ़ते गए ।

शिक्षा और विचार

तिलक ने 1879 में कानून की पढ़ाई पूरी की और उसके बाद वे पूरी तरह से देश की सेवा में जुट गए। उनके मन में हमेशा भारतीय संस्कृति की रक्षा और उसके उत्थान का विचार रहा। उन्होंने देखा कि अंग्रेजों ने शिक्षा प्रणाली के माध्यम से भारतीय संस्कृति पर हमला किया है। उच्च शिक्षा संस्थानों में केवल अंग्रेजी शिक्षकों को नियुक्त किया गया था, जो भारतीय संस्कृति का उपहास करते थे।

तिलक ने 1880 में 'न्यू इंग्लिश स्कूल' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य भारतीय संस्कृति और संस्कारों को सुरक्षित रखना था। उन्होंने शिक्षा को एक महत्वपूर्ण हथियार माना और शिक्षा के माध्यम से ही देश की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त करने की दिशा में अग्रसर हुए।

पत्रकारिता का क्षेत्र

तिलक ने पत्रकारिता के माध्यम से भी स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया। उन्होंने 1881 में 'मराठा' और 'केसरी' पत्रिकाएँ स्थापित कीं। इन पत्रिकाओं के माध्यम से उन्होंने अंग्रेजों की नीतियों की आलोचना की और भारतीय संस्कृति को बचाने का प्रयास किया। उनकी लेखनी ने भारतीय जनता में जागरूकता फैलाई और उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा दी। केसरी पत्रिका ने अंग्रेजों को झंकझोर कर रख दी थी क्योंकि केसरी के माध्यम से वो अंग्रेजों के सभी कमियों को उजागर कर रहे थे जिससे अंग्रेजों का अपना अस्तित्व समाप्त होता सा प्रतीत हो रहा था और वह तिलक के खिलाफ कुछ ऐसा करने का मसौदा तैयार करने लगे जिससे तिलक की कीर्तियों पर विराम लगा सके लेकिन तिलक रुकने वालों में कहाँ उन्होंने अपने पत्रिका के माध्यम से भारतीयता की चिंगारी लगा दी और धीरे-धीरे ये पुरे हिंदुस्तान में फैलने लगा और उन्होंने कहा कि भारतीयों का दब्बु होना और गुलाम होने का एक ही कारन है वो है एकता की कमी और हमे किसी तरह से भी एकता को स्थापित करना है हमारे पास वेद ज्ञान, शास्त्र ज्ञान और अर्थशास्त्र ज्ञान सब कुछ है केवल मात्र एकता आ जाने से हम अपना हक़ आसानी से ले पाएंगे

सामाजिक एकता के लिए प्रयास

तिलक ने भारतीयों में एकता की भावना जागृत करने के लिए 'गणेश महोत्सव' और 'शिवाजी महोत्सव' का आयोजन शुरू किया। इन उत्सवों का उद्देश्य भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखना और हिंदुओं को एकजुट करना था। बाल गंगाधर तिलक में राष्ट्र सेवा की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी इसलिए उन्होंने सब जाति को एक साथ लाने का प्रयास किया और गणेश उत्सव की शुरुआत करि, इस गणेश उत्सव के दो प्रमुख उद्देश्य थे पहला भारतीय संस्कृति को बचाना और दूसरा हिन्दुओं को एक जुट करना हिंदुओं को एक प्लैटफॉर्म (वर्ग) में लाकर इकट्ठा करना जिसमें सभी लोग एक साथ आरती करे, एक साथ प्रसाद ग्रहण करें और एक साथ बैठे जिससे एक दूसरे में प्रगाढ़ता आये । और देखते-देखते ये उत्सव इतना प्रचलित हो गया कि पूरे महाराष्ट्र में एकता की लहर पैदा की और धीरे-धीरे ये उत्सव अन्य राज्यों में भी फैल गए।

स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी

तिलक का मानना था कि स्वतंत्रता किसी मांगने से नहीं, बल्कि संघर्ष से प्राप्त होती है। 1905 में बंगाल के विभाजन के खिलाफ उन्होंने पुरजोर विरोध किया और बहिष्कार आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। उनके विचारों ने कांग्रेस में दो ध्रुवों का निर्माण किया - नरम दल और गरम दल। तिलक गरम दल के नेता बन गए और उन्होंने युवाओं में एक नई चेतना का संचार किया।

जेल यात्रा और गीता रहस्य

तिलक को उनके क्रांतिकारी विचारों के कारण बार-बार गिरफ्तार किया गया। 1897 में उन्हें 18 महीने की सजा सुनाई गई, जिसके दौरान उन्होंने 'आजादी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' का नारा दिया। उनकी इस धारणा ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी।

तिलक ने अपने कारावास के दौरान 'गीता रहस्य' नामक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने श्रीमद्भागवत गीता की व्याख्या की। इस पुस्तक में उन्होंने भारतीयों को संघर्ष करने और अपनी संस्कृति की रक्षा करने के लिए प्रेरित किया।

होम रूल लीग

जेल से रिहा होने के बाद, तिलक ने एनी बेसेंट के साथ मिलकर होम रूल लीग की स्थापना की। यह लीग भारतीयों को स्वशासन के लिए संगठित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास था। तिलक ने कहा कि स्वराज कोई पके हुए फल के समान नहीं है, जिसे मांगने से प्राप्त किया जा सके। इसके लिए संघर्ष करना पड़ेगा।

अंतिम दिनों में योगदान

तिलक का जीवन राष्ट्र सेवा के प्रति समर्पित रहा। उन्होंने व्यक्तिगत हितों को त्यागकर राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखा। उनका विश्वास था कि जब भारतीय संगठित होंगे, तब अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ेगा। उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें 'गीता रहस्य', 'ओरियन', और 'द आर्कटिक होम ऑफ वेदास' शामिल हैं।

निष्कर्ष

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जीवन और कार्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरणादायक हैं। उनके विचारों ने न केवल राजनीतिक स्तर पर, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी भारतीय समाज को जागरूक किया। तिलक की योगदानों को कभी भुलाया नहीं जा सकता, और उनका नारा 'स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' आज भी हमें प्रेरित करता है। उनकी सोच और कार्यों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के मार्ग को प्रशस्त किया, जिससे भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की। तिलक की विरासत आज भी हमारे लिए एक प्रेरणा स्रोत है।

तिलक का सम्पूर्ण जीवन देश के स्वाभिमान को बचने और उसे ऊँचा उठाने के लिए रहा उन्होंने व्यक्तिगत हित को ताक पर रखा और राष्ट्र को सर्वोपरि लेकिन जेल के सजा काटने के अंतराल में उन्हें एक ऐसे दुखद घटना का सामना करना पड़े जिससे वो सहम से गए वो था उनकी पत्नी की मृत्यु और उनका अंतिम दर्शन भी न कर पाना पर वो टूटे नहीं और राष्ट्र हित में कार्य करते रहे और उनका

हमेशा से मानना था जिस दिन भारतियों संगठित हो जायेंगे उसी दिन अंग्रेजो को भारत की धरती को छोड़ने के लिए विवश होना पड़ेगा , जेल से छूटने के बाद उन्होंने लोगों को एकजुट करने के लिए प्रयास करते रहे और इसी क्रम में उन्होंने एनी बेसेंट के साथ मिलकर होम रूल लीग की स्थापना की और भारतीय आन्दोलन में एक नयी जान फूंक दी । तिलक जी के कृत्यों को अंग्रेज कभी हजम नहीं कर सके यहाँ तक कि अंग्रेजों ने इन्हें भारीतये अशांति का जनक की संज्ञा तक दे दी । लेकिन तिलक अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए और उन्होंने एनी बेसेंट के साथ मिलकर भारतियों के लिए स्वशासन प्राप्त करने के मार्ग पर आगे बढ़े और उन्होंने इसके लिए याचना नहीं किया बल्कि अपने लेख और भाषणों के द्वारा भारतियों को बताया की स्वशासन भारतियों का अधिकार है और उन्होंने बड़ी संख्या में लोगो को होम रूल लीग से जोड़ने का काम करा ।

तिलक जी द्वारा लिखित तीन प्रमुख पुस्तक:-

१. **गीता रहस्य** (श्रीमद्भागवत गीता का मराठी में अनुवाद)

२. **ओरियन** (वेदो की आयु ज्योतिष से निकली जो की ४५०० वर्ष)

३ **द आर्कटिक होम ऑफ़ वेदास** (आर्यों का मूल निवास ध्रुव प्रदेश में था)

तिलक जी के प्रमुख विचार थे :-

१. स्वराज कोई पके हुए फल के समान नहीं है जो आपने आप हमारे मुहं में आ गिरेगा इसे हमे स्वयं संघर्ष से ही प्राप्त होगा ।
२. जब हम स्वशासन की बात करते हैं तो हमारा अर्थ है की हम अपने घर के स्वामी है और उसका शासन हम खुद ही चलएंगे ।
३. हम अंग्रेजी सत्ता में रहने को तैयार हैं लेकिन हमें कोई निम्न स्तर स्वीकार नहीं ,
४. हम वेदों के बिच पले हुए सिंह के शावक हैं और अब हमे ये पता चल गया है कि हम कौन हैं

इस तरह उनके विचारों ने विभिन्न तत्वों और विरोधी लोगों को भी एक मंच पर ला खड़ा कर दिया और भारतियों के लिए एक शपथ सा बन गया और अंतोगत्या अंग्रेजों को भारत छोड़ कर जाना पड़ा लेकिन उस पल को देखने के लिए बाल गंगाधर तिलक जीवित नहीं रहे और उनका देहांत १ अगस्त १९२० को हो गया। तिलक जी द्वारा किये गए एक एक कृत राष्ट्र के लिए अनुसरणीय है और नवयुवकों के लिए प्रेरणा स्रोत है। तिलक जी द्वारा किया गया हर एक कार्य त्याग एवं समर्पण भारतीय स्वतंत्राता आन्दोलन का एक उज्जवल प्रतिक है और उनके द्वारा किये गए राजनैतिक, समाजिक सभी कार्य सभी आयामों

तथा सभी वर्गों के सहभाग से देश को नयी दिशा दे सकी, जिससे देश का आजादी का मार्ग प्रशस्त हो सका, तिलक जी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के जनक थे इसलिए हमारे जीवन में उनके विचार सदा प्रेरणास्रोत का काम करते रहेंगे ।

संदर्भ

1. आधुनिक भारत की शिल्पि, विश्वप्रताप गुप्त, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2006।
2. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान, सुधा कुलश्रेष्ट, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2007।
3. युगनायक लोकमान्य तिलक, राष्ट्र भाषा संस्थान, दिल्ली, 2000।
4. लोकमान्य तिलक, सुशिल कुमार, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, 1985।